Here is the Hindi text of some of the songs that Meher Baba wrote.
They were collected over many years by Khorshed K Irani,
noted down by Bhau Kalchuri,
then read out to Baba at Guruprasad
and corrected by Baba Himself.
They are presented here with the permission of the copyright holder,
AMBPPC Trust, Ahmednagar. Not for commercial distribution.

SANAM KI SURAT....

सनम की सूरत है जब से देखा वो नक्शा अब तक समा है दिल में |
जुदाई ने की जिगर के टुकड़े वो दाग अब तक रहा है दिल में ||

वो गुल के उल्फत को दाना समझो या दाम समझो वो बुत की जुल्फें |
खयाल जिसका मिसाले बुलबुल निकल के सर से फँसा है दिल में ||

खुदी मिटी तो हुई फना है, खुदा का आशिक खुद ही खुदा है |
एक ही ठिकाना है दोनों दिल का दिलबर में दिल दिलरुबा है दिल में ||

जाहेद तू जाहिर बन्दगी कर के माँगता है तू मुराद हक से |
वो पुख्ता आशिक के नामे यजदां हमेशा पिनहां कहाँ है दिल में ||

अजब निराली ढब औलियों की, वो एक ही दम में है खण्दो गिरिया |
जाहिर में नफरत बातेन में उल्फत जबाँ पे गाली, दुआ है दिल में ||

कोई कहे हक है बुतकदे में, कोई कहे रब की जाँ है मस्जिद |
तू अपने बाहर क्या ढूँढता है समझ ले "हुमा" खुदा है दिल में ||

SANA HO SIFAT BABA KI ...

सना हो सिफत बाबा की दिले हर बार करते है ।
हमे ख्वाहिश दरमाँ की तो वो बीमार करते हैं ॥

पिला के पहिले मय बाबा दिलाते पीछे है मस्ती ।
बना के पहिले दीवाना पीछे हुशियार करते है ॥

बने हैं खाक बाबा की तो पावे वस्ल अल्ला का ।
दिला के मार जूती की गले का हार करते हैं ॥

नही उम्मीद दुनिया से हमें ख्वाहिश फकीरी की ।
ये राहे इश्के हक में उन पे ही एतबार करते हैं ॥

हमें नापाक गाफिल को मिले वस्ले खुदा कैसा य
मिलाने पाकी बाबा से अर्ज बिशियार करते हैं ॥

ये सारी कोशिशें बरबाद की एक खुद परस्ती ने ।
हमारी दिल की ये बातें सरे दरबार करते हैं ॥

खुदा हर जाँ पे यक सा है, उसे तो आशिक़ ही देखे ।
खुदा को बाबा अपने ही दिल में इजहार करते है ॥

बजमे रंज में गम में मिला हरगिज न आशिक से ।
खुदा की जैसी हो मरजी कहाँ तकरार करते है ॥

तू कब तक रोयगा "हुमा", सबर करना ही अच्छा है ।
तूने फरियाद की लाखों कहाँ दरकार करते हैं ॥

KHUDA KE WASTE...

ख़ुदा के वास्ते बाबा सुनो इतना सुख़न मेरा |
तुम्ही बाबा तुम्ही माता, तुम्ही भाई बहन मेरा ||

गिरफ्तारे गुनाह हूँ मैं, ख़्यालम चार सु दौड़े |
हवस के फ़ानी दरिया में डूबा है तन बदन मेरा ||

ये बागे दिल भरा मेरा है नापाकी के काँटों से |
कब एकताई के फूलों से बसाओगे चमन मेरा |

ख़ुदी से कब छुड़ाओगे शक दिल का मिटाओगे
कभी आशिक बनाओगे ये ही हरदम कहन मेरा ||

फ़कीरी दो मुझे बाबा के पहिचानूँ इलाही को |
ये ही है बन्दगी मेरी, यही बाबा भजन मेरा ||

जहाँ के फ़ानी झगडों से अलग रहने की है ख़्वाहिस |
कभी बाबा बनाओगे ख़ुदा से लगन मेरा ||

बता दो राह "हुमा" को यही पर ख़ाक चाटेगा |
यहाँ पे जिन्दगी मेरी, यहाँ होगा कफ़न मेरा ||

DUNIYADARI CHHORKAR MAI KHUDA SHANAS ....

दुनियादारी छोड़कर मैं खुदा शनास होते चला ।
बुझ गई बत्ती हवस की हक उदास होते चला ॥

खाना पीना ऐशो इशरत षविलष किया रब के लिये ।
मिटगई दुनियाँ की तरस रब प्रेम प्यास होते चला ॥

प्रेमी से हो भक्ती, भक्ती से हो मुक्ती का चलन ।
जग की माया छूट गई ईश्वर के पास होते चला ॥

मिल सके खालिक जब होवे खाक से भी खाकसार ।
करके खिदमत खादिमों की प्रभ-दास होते चला ॥

रंज को पाते ही मुझको गंजे हककानी मिला ।
नोक पे काँटों के अब फुलों का बास होते चला ॥

एक के ही बन्दों का सब उस पे ही "हुमा" फिदा ।
आप बन्दों से अलग आप बन्दे खास होते चला ॥

TERI HI MAIN HUN DIVANA...

तेरा ही मैं हूँ दीवाना सनम कुछ तो वफ़ा कर तू ।
न कोई से तो सच्चे इश्क बाजी से हया कर तू ।।

दूजे का मारते जालिम वो खुद बे मौत मरता है ।
सनम मुझ पर जुल्म कब तक जरा खौफे खुदा कर तू ।।

सिवा आशिक जुदाई में तड़पना कोई क्या जाने ॥
रहम कर खस्ता हालत पर, मेरे दिलबर दवा कर तू ।।

तेरे ही इश्क में जानो जिगर दिल ये रहा जाता ।
ये जानो तन हुये हाजिर जो चाहे वो फना कर तू ।।

तू अपनी ही फिक्र में मस्त ये आशिक की कहाँ परवाह ।
खुदा के वास्ते काफिर खुदी अपनी तबा कर तू ।।

दिखा के पहले सूरत को बनी तू चश्म की पुतली ।
छुपा के मुखड़ा अब मेरे जिगर में दब रहा कर तू ।।

"हुमा" ने सौ नसीहत तुझको की सब का एक ही मतलब ।
ये सब झगड़े खयाली हैं, खयाले रब सदा कर तू ।।

GUDA KE GHER AGAR EK SHUB...

गदा के घर अगर एक शब सनम मेहमान बन जावे |
सहर होते ही आशिक आपका सुल्तान बन जावे ||

कमर बाकी जुदाई में हुई जानां कमान जैसे |
अगर एक तीरे अहा छोड़ूँ तो तू बेजान बन जावे ||

हमारी इश्क की किश्ती का तू है नाखुदा यारो |
हमें क्या डर अगर कुल्ले जहां तूफान बन जावे ||

गुरू नुक्ता खुदाई का सुना के कह रहा यारो |
खुदी अपनी मिटावे तो तू खुद यजदान बन जावे ||

जिगर जख्मी कलेजा खूँ, दिल के बन गये टुकड़े |
अगर हालत करूँ जाहिर तो सब हैरान बन जावे ||

मलक से मैं बनूँ बेहत्तर नजर उस्ताद की गर हो |
गुरु के लुत्फ से हैवान भी इन्सान बन जावे ||

गुरु उपासनी महराज मिटावे शक अगर दिल का
तो "हुमा" नाम पे उस्ताद के कुर्बान बन जावे ||

BANDA HUN GULAM HUN MAIN,...

बन्दा हूँ गुलाम हूँ मैं, हूँ दर्बान खुदा का ।
तन भी खुदा का है, है दिलोजान खुदा का ।।

रिज्जक खालिक बन्दे के खिदमत में सदा है ।
सच पूछो तो हर कोई है मेहमान खुदा का ।।

विरदे जबाने परीन्देगान भी है तू ही तू ही ।
चिड़िया भी हरदम पुकारती एहसान खुदा का ।।

बोले ये रब को हम ने तेरा ही ख्याल करेंगे ।
आशिक हो सच तो लावे बर पैमान खुदा का ।।

आतिश कदा बुतखाने मे देवल या मस्जिद में ।
हर जाँ पर हाजिर है जल्वा यकसान खुदा का ।।

बन्दे ने सर पटका बली कुछ भी न हुआ हासिल ।
होता है वही जो होवे फर्मान खुदा का ।।

हिरसो हवा की मस्ती से "हुमा" हुआ बे पर ।
उड़ता हवा में बे परवाह मस्तान खुदा का ।।

MUJHKO GURU APNA KAMIL BANA DIYA...

मुझको गुरु ने अपना कामिल बना दिया ।
जाहिल था सर बशर मुझे आकिल बना दिया ।।

पहले खयाले इश्क था, अब है ख्वाहिसे वस्ल ।
आसान मेरे काम को मुश्किल बना दिया ।।

वाकिफ न था कोई के मैं आशिक हूँ सनम का ।
इस राज को अब जाहिरे महफिल बना दिया ।।

मैं ये समझता था के मेहनत अब कबूल होगी ।
क्या खबर के आपने बातिल बना दिया ।।

सब पर नजर है लुत्फ की यकसान तुम्हारी ।
मेरे लिये क्यों रहम को कातिल बना दिया ।।

दिलबर तू है बानाज तो मैं बानियाज हूँ ।
"हुमा" को आपने हसवे से बेदिल बना दिया ।।

UTHAYA DARD-E-HAQ SAR NE...

उठाया दर्द ए हक सर ने न कुदरत का हुनर पाया ।
जो पूरा भेद ये समझे न कोई ऐसा बशर पाया ||

सनम के खुश उम्मीदों से हुआ फरहाद सा साबिर ।
शीरीन बर आवे जब खावे अभी कडुवा सजर पाया ||

उसीके इश्क में खुर्शीद से रोशन तर ये दिल देखा
नही मेरी ये जहमत उसकी सोहबत का असर पाया ||

जिधर देखो उधर मुझ जानाँ का मुखड़ा नजर आवे ।
हरएक शय में एक दिलबर बहरे शमो सहर पाया ||

नही उम्मीद दुनियाँ से, हमें उम्मीद खालिक की ।
जहां को बेवफा मंजिल अबस मतलब का घर पाया ||

जिन्हें है इश्क के दर्दी उन्होंने तर किया मरजी ।
आशिक को सच्चा दानिशमन्द जाहिद को सच्चा खर पाया ||

गजल खानी बहक दानी नही है खेल बच्चों का
“हुमा” को हर सुखन सुफ्ता बेहमता गौहर पाया ||

SANAM KE JANE...

सनम के जाने से आशिकों को कभी है रहमत कभी जफा है ।
हजार रंग है सनम ने बदले, हजार अब तक बदल रही है ।।

कभी है नफरत कभी मोहब्बत कभी अदावत कभी वफा है ।
पीरे मुगा का गुलाम हूँ मैं, है लुत्फ जिसका हमेशा यकता ।।

तमाम जाहिर परस्तियों में कभी है उल्फत कभी दगा है ।
सनम परस्ती के सारे झगडे हमारे बातेन में साफ देखो ।।

क्या कोई जाने हमारी हालत कभी है मेहनत कभी मजा है ।
कभी है दरियाये इश्क में तो कभी हवस में हमारी किश्ती ।।

ये ही सबब से ओ पाक मल्ला कभी है संगत कभी जुदा है ।
हमेशा आना हमेशा जाना, आखिर इलाही का वस्ल पाना ।।

बता दो मुझको ऐ शेखो जाहिद कभी कयामत कभी फना है ।
आशिक इलाही का वो ही सच्चा हमेशा जिसका खयाल यकता ।।

“हुमा” के फिरते खयालों में तो कभी है दौलत कभी खुदा है ।।

AAJ HAI MATAM KA GHER KAL JIS JUGE...

आज है मातम का घर कल जिस जगे शादी हुई ।
क्या कहूँ ऐ यार मेरे कैसी बरबादी हुई ।।

बिस्तरे मखमल के मालिक खाक में सोते पडे ।
है जमी अब उनका बिस्तर, ईंट की गादी हुई ।।

वस्ल नही मिलता तो क्या गम इश्क को छोडें क्यों मै घ
जाय अनखी के लिये क्यो पास जो आधी हुई ।।

या तो वापस जान ले या वस्ल से दे जिन्दगी ।
दादगर फरियादगर से मेरी फरियादी हुई ।।

सब से मुश्किल काम आदम का हवस से छूटना ।।
शुक्र "हुमा" कर खुदा का तुझको आजादी हुई ।।

REHMAT KI NAZAR SE

रहमत की नजर से आशिक पे जानाँ तू फजल कर ।
जान हाथ से जाती रही तन रह गया गल कर ।।

हर दो तरफ से इश्क में बरबादी खूबी की ।
परवाना जला के रह गई खुद शमा भी जल कर ।।

किस्मत का नक्शा रोजे अजल कीरदार ने खींचा ।
ताकत हो बन्दे तुझमें तो तकदीर बदल कर ।।

नासेह तू पहले पाक कर दिल फिर दे नसीहत ।।
"हुमा" तेरे गुफ्तार के अमसाल अमल कर ।।

ASHIQ TU JEHAN CHHOR KE ....

आशिक तू जहां छोड़ के बस यादे खुदा कर, बन्दगी तू सदा कर
बस्ती को तर्क करके जंगल में मजा कर, आजाद फिरा कर ||

दर्दी हूँ शुक्र जालिम मैं तुझसे तो हारा, दिल संग है खारा ।
मरता है तेरा आशिक जाना दुतू दवा कर दारु दे सफ़ा कर ||

जाहिद की मोहब्बत में नही कुछ भी असर है, साकी को खबर है ।
मस्जिद को छोड़ दे जाहिद मैखाना बसा कर , मदहोश रहा कर ||

सब कुछ निसार कर तू कुछ भी न तलब हो, कुर्बान ही सब हो ||
कदमों पे इलाही के सर जान फ़िदा कर, मर मर के जिया कर ||

आराम कहाँ से हो जब राम जुदा है, गायब ही खुदा है ।
बेचैन जिन्दगी है, दिलबर तू दया कर, कुछ तो मया कर ||

वो बुत का वस्ल पाना "हुमा" नही आसान, दुश्वार है पहिचान ।
अपनी खुदी मिटा दे, हस्ती को फना कर, तन मन से जला कर ||

OM TU PARMATMA TU,...

ओम तू परमात्मा तू, राम तू भगवान तू ।
गॉड तू अल्लाह अहुरमज्द ब्रह्म तू यजदान तू ॥

तू जगदुदुदुत्तकर्ता पिता तू, तू ही पालनहार है ।
मालिके हर दो जहां तू एक तू यकसारन तू ॥

तुझसे पैदा सारी हस्ती, तुझसे कुदरत का निशां
हाजिर है हर शय में यकसर अज नजर पिनहान तू ॥

तुझसे कुल खलकत है पैदा, तू जमीनो तू जमान ।
आसमाँ खुर्शीद तू कवकेब तू ताबान तू ॥

हुक्म तू हाकिम तू ही महकूम भी तू या खुदा ।
तू ही मालिक तू ही नौकर तू गदा सुलतान तू ॥

इश्क तू फुरकत भी तू है, वस्ल तू दीदार भी ।
तू सनम आशिक तू ही है जान तू जानान तू ॥

तू निराकर बेरंग तुझसे रंग सब हैं आशकार ।
तू बशर जिन्नोपरी तू, हुर तुही गुलमान तू ॥

ढूँढता हुँ तुझको यारब क्यों नही मिलता मुझे ?
फज्ल करके वस्ल दे तू रहम कर रहमान तू ॥

सदगुरु ऊपासनी महराज तू, अवतारे तू ।
मेहेर करके अब “हुमा” को रब की दे पहिचान तू ॥

AJAB HAI KATIL KHUDA KI REHMAT...

अजब है कातिल खुदा की रहमत बिछाये काँटें गुलाब में भी ।
अदल है शामिल खुदा की अजमत सितम रखा है सवाब में भी ।।

हराम हो या हलाल हो मय मुझे तो मस्तिये इश्क होना ।
खुमारे इश्क के इलाही जैसा न पाया लज्जत शराब में भी ।।

न दफ्तरे इल्मे इश्क पैदा गजब है मुश्किल कलामे मोहब्बत
बर लूहे सीना लिखा हुआ हक पढा न कोई किताब में भी ।।

वस्ल से दे खुदा जिन्दगी तेरे ही तो हिज्र में मर चुका हूँ ।।
फिराक में रंजोगम की गिनती न आवे हरगिज हिसाब में भी ।।

जिगर से मेरे खूँ बह रहा है, कबाब मेरा दिल हो चुका है ।
जिगर के जख्मों में जो नमक है न होगा ऐसा कबाब में भी ।।

सवाल बन्दे से क्यों करें हम हमारी हाजत खुदा से ढूँढे ।
सवाल में भी खुदा शनासी, खुदा शनासी जवाब में भी ।।

खुदा को हर जां है देखा यकसां, है अपने दिल में उसका रहना ।
आबाद घर का खुदा है साकी हाजिर है खाना खराब में भी ।।

जहां के रंजो अलम सितम से खयाल में बेकरारी क्यों हो ?
हो मेहेरबानी खुदा की "हुमा" मिलेगी राहत अजाब में भी ।।

BANAYA HAU TUNE YE KHAKI ....

बनाया है तूने ये खाकी पुतला, अजब उसे तूने ये जान दिया है ।
ये खाक को तुझसे एक होने अजब तूने ईमान दिया है ।।

तेरी कुदरत के कारखाना से कारीगरों में कहाँ हो इब्लिस ।
मुझे न पहिचाने जो मुनाफिक लकब उसे शैतान दिया है ।।

हर जुल्म तुझको मेरी नजर में अजीजतर दे रही है इज्जत ।
आफत बला में आशिक ने तेरे नाम तुझे रहमान दिया है ।।

दो पल का झगडा दो घडी की खटपट, दो दिन का है ये खेल तमाशा ।।
आलम सलामे मिसाले आदम दो दम तुने मेहमांन दिया है ।।

निशान तेरा मिले न किसको जब जात तेरी है बेनिशाँ खुद ।
“हुमा” को झकोलते खुदी अपनी उसे तूने पहिचान दिया है ।।

ZALIM BESHAR KI DUNIYA ...

जालिम बशर की दुनियाँ होगा मकान कब तक ?
मुफ्लिस को सताने का रहेगा ये काम कब तक ? ||

गई आबरू व इज्जत, अजमत गई व हश्मत ।
दुनिया की ऐशो इशरत मुझको हराम कब तक ?||

ऐ ! शाहा इस गदा को कुछ तो जवाब दे दे ।
तेरे जनाबे हक में साहिब सलाम कब तक ?||

मीठे ही फल खिलाऊँ साबिर सजन को तेरे ।
मुझको ये तेरा हरदम होगा पयाम कब तक ?।

कदमों पे तेरे सर हो, दिल मेरा तेरा घर हो ।
खिदमत में तेरी ख्वाजा रहेगी गुलाम कब तक ? ।

फानी है तमाम दुनिया, बाकी खुदाई समझो ।
ये शब तमाम होगी रहेगा ये शाम कब तक ?।

तारीफ तेरी अदा की जितनी करूँ वो कम है ।
तेरी सिफत के यजदाँ अदना कलाम कब तक ? ।

बेहद हुई इबादत, कायम रही ये आदत ।
कहता रहेगा "हुमा" यजदाँ का नाम कब तक ? ।

KUND-O-SHUKKAR...

कन्दो शकर दिल दो तौरे मगस में हूँ मैं हु।
शीरीन सुखन जुदा दो हरफी बहस में हूँ मै ।।

दुनियाँ को छोड़ते ही रब का पता मिलेगा ।
कैसे दिखेंगे मालिक अब तक हवस में हूँ मैं ?।

खालिक से हुं मै बन्दा, बन्दे से वो है खालिक ।
मुझमे है हक के आदिल फरियाद रस में हूँ मै ।।

खाकी नजर से रब को है देखने की ख्वाहिस ।
ऐसा नही हो सकता फिके अबस में हूँ मैं ।।

ये दर्द बे दवा है, छाती में दम रुका है ।
सब कुछ भी हो चुका है आखिरी नफस में हूँ मै ।।

“हुमा” का रुही तोता कहे तन के पीजड़े में
आजाद कर दे यजदां बदनी कफस में हूँ मै ।।

KYA SANG DIL...

क्या संग दिल है सनम जो मुझको दिखाती पत्थर बुला बुला कर
छुपाती मुखड़ा है ख्वाब में भी, जगाती मुझको सुला सुला कर ||

हजार उम्मीदें यार ने दी, न एक वादे को भी अदा की |
बवक्ते वस्लत बताई फुरकत रुलाया मुझको हँसा हँसा कर ||

न शर्म तुझको, न धर्म तुझको, वफा नहीं तुझमें मर्दे काफिर |
खुदा ने बख्शी है तुझको हस्ती उससे तो ऐ बे हया हया कर ||

परवाने को लज्जत शम्मा को इज्जत जलने जलाने में है यह बरकत
बनाया मशहूरे हर दो आलम सनम ने मुझको जला जला कर ||

बखील खूँ को पानी बनावे, न जानता साथ कुछ ना आवे |
क्या किया महमुदे गजनवीने दुनियाँ की दौलत जमा जमा कर ||

“हुमा” तू हरदम करे नसीहत, समझ नही तो अमल हो कैसा ?
न हो तू गाफिल ऐ खाके बन्दे जबाँ से हरदम खुदा खुदा कर ||

PIR-O-MURSHID....

पीरो ओ मुर्शिद मुझपे तेरा जावेदा एहसान है ।
लाख होवे जान मुझको तुझपे सब कुर्बान है ॥

बहरे वहदत में डुबा कर खुदसा दरिया कर दिया ।
एक ही पल में किया बन्दे से फिर यजदान है ॥

शाही फक्रा रहम का दरिया ऐ मुक्कमिल मुर्शिदा ।
तेरी रहमत की नजर हो तो गदा सुल्तान है ॥

कुदसियो इन्सां परियो हुरो गिल्मानो मल्क ।
तेरी अजमत की शनासी में ये सब हैरान है ॥

तन करुँ गर कफ्से पाये हजरते रोशन जमीर ।
फिर भी जीरे बारे एहसान कमतरीन मेहेरबान है ॥